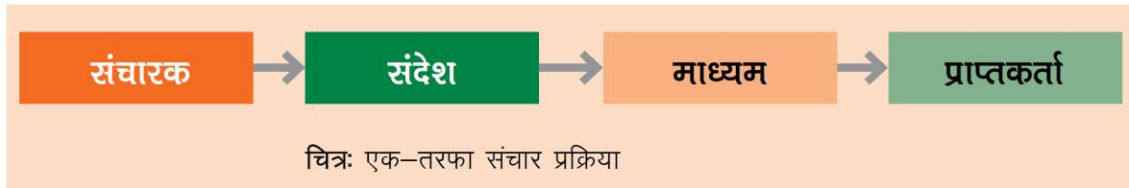


:::: संलग्नक III: संचार मॉडल और तत्वों पर हैण्डआउट

संचार मॉडल और तत्व

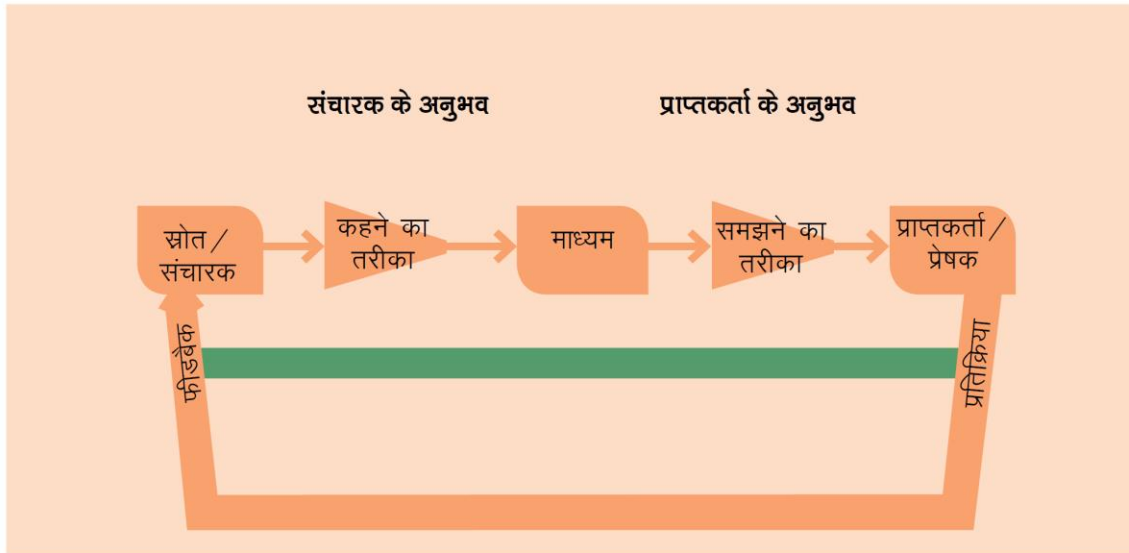
संचार एक तरफा या दो-तरफा प्रक्रिया हो सकती है। आइए हम सबसे पहले इसके अंतर को समझें।

एक-तरफा संचार प्रक्रिया: जब जानकारी का प्रवाह एक ही दिशा में हो रहा हो तो उसे एक-तरफा संचार कहते हैं। इस संचार प्रक्रिया में जानकारी का प्रवाह संचारक से प्रेषक (प्राप्तकर्ता) की ओर होता है लेकिन प्रेषक संचारक को कोई फीडबैक नहीं भेजता है। नीचे दिए चित्र में इस प्रक्रिया को दर्शाया गया है:



दो-तरफा संचार प्रक्रिया: दो तरफा संचार तब होता है जब प्रेषक संचारक को फीडबैक भेजता है। दो तरफा संचार प्रक्रिया में संचारक और प्रेषक दोनों ही एक-दूसरे के विचारों को समझते हैं। इसे सर्किट संचार भी कहते हैं। नीचे दिए चित्र में इस प्रक्रिया को दर्शाया गया है:

चित्र: दो-तरफा संचार प्रक्रिया



संचार मॉडल के तत्व

स्रोत

संचार मॉडल का पहला तत्व है स्रोत। यहां से संदेश का उगम होता है। यह एक व्यक्ति, समूह, या संस्थान या संगठन हो सकता है। संचार योजना प्रक्रिया में स्रोत बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे संदेश की विश्वसनीयता निर्धारित होती है। स्रोत पहुंच के अंदर, स्वीकार योग्य, और वैध होना चाहिए। यह स्रोत विचार को जन्म देता है या किसी जानकारी को संचार करने का फैसला लेता है।

संदेश

संदेश वह विचार है जिसको संचारित किया जा रहा है। संदेश सरल, स्पष्ट, और कार्य-उन्मुख होना चाहिए। संदेश की सामग्री को लक्षित व्यक्ति/जन-समुदाय के सामने पेश की जानी चाहिए, इसी प्रोग्राम स्टाफ की सोच के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता। अक्सर ऐसा होता है कि संदेश को केंद्रीय तौर से तैयार किया जाता है और हो सकता है कि वह विशिष्ट परिस्थिति के अनुरूप न हो।

माध्यम

माध्यम वह जरिया है जिसके द्वारा संदेश संचारक से प्रेषक/प्रेक्षक तक पहुंचता है। यह मध्यम अंतर्व्यक्तिक हो सकता है जहां संदेश सीधे स्रोत से प्रेषक तक पहुंचता है, या सामूहिक संचार हो सकता है, जहां एक या अधिक स्रोतों से एक या अधिक प्रेषकों तक संदेश पहुंचता है। इसमें न्यूज प्रिंट, टेलीफोन या सेटलाइट प्रसारण, या रेडियो जैसे माध्यम शामिल हो सकते हैं। संचार की कार्य कुशलता और प्रभावशीलता निर्धारित करने में माध्यम का चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है। बेहतर परिणामों के लिए एक से अधिक माध्यम का उपयोग किया जाना चाहिए। एक से अधिक माध्यमों का उपयोग अधिकतम लक्षित जन समुदाय तक पहुंचने के लिए किया जाना चाहिए।

प्रेषक या लक्षित प्रेक्षक

किसी संदेश के लिए लक्षित व्यक्ति/प्रेक्षक कौन हैं? प्रेषकों की पहचान करने के लिए उनका वर्गीकरण या सामूहिकीकरण करना जरूरी है। लक्षित प्रेक्षकों के भिन्न समूहों का इस प्रकार वर्गीकरण किया जा सकता है – बच्चे, अभिभावक, दोस्त, सहकर्मी, इत्यादि।

फीडबैक या प्रतिपुष्टि

फीडबैक संचार के एक अभिन्न तत्व हैं। फीडबैक संदेश के स्रोत के लिए प्रेषक की प्रतिक्रिया है। प्रेषक की यह प्रतिक्रिया स्रोत के लिए अपने संदेश को सुधारने/बेहतर बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। एक अच्छा संप्रेषक हमेशा फीडबैक को बहुत गंभीरता से लेता है – जैसे प्रेक्षक को क्या नजर आया, और क्या समझ में आया इत्यादि, ताकि वह अपने संदेश में जरूरी सुधार कर सके। बगैर फीडबैक में संचार एक-तरफा हो जाएगा।

शोर

शोर वह तत्व है जो संदेश को प्रेषक तक पहुंचने में बाधा डालता है। एक परिस्थिति ऐसी हो सकती है कि शोर की वजह से संदेश प्रेषक तक पहुंच ही नहीं रहा है। जैसे टेलीफोन लाइन में जोर की दहाड़ जैसी आवाज या फिर स्टेटिक, की वजह से आवाज प्रेषक तक नहीं पहुंचती है। दूसरी ओर ऐसा भी होता है कि जो संदेश भेजा गया है वह बिना किसी भी रूकावट के प्रेषक तक हुबहू पहुंच जाता है। मगर अक्सर ऐसा होता है कि प्रेषक तक पहुंचते हुए शोर की वजह से संदेश में विकृति आ जाती है। जैसे कि संदेश श्रवण-संबंधी (ऑडिटरी) या दृष्टी-संबंधी (विजुअल) होते हैं, उसी तरह से शोर भी श्रवण-संबंधी या दृष्टी-संबंधी होता है। खासतौर से चार प्रकार के शोर प्रासंगिक हैं:

भौतिक शोर: भौतिक शोर का संचारक और प्रेषक से कोई संबंध नहीं होता है। यह शोर संदेश को संचारक से प्रेषक तक पहुंचने से रोकते हैं जैसे आने-जाने वाले वाहनों की आवाज, कम्प्यूटर से निकलने वाली आवाज, धूप का चश्मा, धुंधले अक्षर जो बहुत छोटे हैं या पढ़ने में कठिन हैं, गलत लिखे गए हैं, व्याकरण में गलती है, या पॉप-अप विज्ञापन।

शारीरिक शोर संचारक या प्रेषक की शारीरिक विकलांगता की वजह से हो सकता है जैसे आंख या कान का दोष होना, बोलने में कठिनाई, और याददाश्त खो जाना।

मनोवैज्ञानिक शोर का अर्थ है संचारक या प्रेषक की सोच के चलते मानसिक रूकावट, जैसे पूर्व विचार, भटकते विचार, झुकाव या पूर्वाग्रह, संकीर्ण सोच, अत्याधिक भावनात्मकता, इत्यादि। ऐसा मनोवैज्ञानिक शोर उन लोगों के साथ हो सकता है जो संकीर्ण सोच रखते हैं और किसी भी अन्य विचार को सुनने को तैयार नहीं होते हैं, जो उनके मत से भिन्न है।

अर्थ-संबंधी शोर से रूकावट तब आती है जब संचारक और प्रेषक की शब्दार्थ-शैली भिन्न होती है, जैसे भाषा या बोली का अंतर, विशिष्ट शब्दों या कठिन शब्दों का उपयोग, अस्पष्ट या अमूर्त शब्द जिनका अलग-अलग और गलत अर्थ निकाला जा सकता है। इस तरह का शोर अक्सर डॉक्टर या वकील के साथ संवाद में नज़र आता है।

